ढीटो-ढीटो रे भयो, श्याम हाय बड़ो ढीटो।।

घेरै बाट कुवाट अकेली
जब कोऊ रहै न संग सहेली,
हाय मैया री ब्रज को बसिबो
बड़ो कठिन है ब्रज को रहिवो।
ग्वाल बाल लै संग में आवै
बछरा खोल कहूँ छिप जावै,
हाय मैया री बछरा कूदै
बछरा कूदैं इत उत भाजैं।
गगरी भर लौटूं पनघट ते
कंकरी मार भजै झटपट ते,
हाय मैया री गगरी फूटै
गगरी फूटै हम सब भीजैं।
माखन की घर धरी कमोरी
माखन खाय मथनियां फोरी,
हाय मैया री दह्यो बखेरो
दह्यो बखेरो दूध ढुरायो।।

तैंने जादू डाला रे अरे सांवरे।।

गूजर बनी दधी बेचन गई,
मारग में पाय गयो रे, अरे सांवरे।
मालिन बन के बाग गई,
मलिया बन आयो रे, अरे सांवरे।
पनिहारिन बन गई कुंवा पै,
देवरा बन आयो रे, अरे सांवरे।
रनियां बन के गइ महलों में,
राजा बन आयो रे, अरे सांवरे।
हिरनी बन के गइ जंगल में,
नैनन तीर मारा रे, अरे सांवरे।।

------o------

मैया तेरो लाला बड़ो जुलमी।।

देखत में ये छोटो दीखै, बादर फारै ये जुलमी।
सातं बरस को याय मत जानै, चूनर फारै ये जुलमी।
घर में घुस कें माखन गटकै, पकरत सटकै ये जुलमी।
जब जब जाऊँ यमुना इकली, तब तब छेड़ै ये जुलमी।
जब जब जाऊँ कुंज गलिन में बैंया पकरै ये जुलमी।।

नेक हेल उचाय जारे, छोरा नंद जू के।।

भारी हेल को छबड़ो भारो
नेक हाथ लगाय जा रे, छोरा नंद जू के।
ऊबट बाट कोऊ ना संग में
नेंक दरस दिखायजा रे, छोरा नंद जू के।
सद लौनी माखन की दउंगी
नेंक भोग लगायजा रे, छोरा नंद जू के।
टेड़ी मेड़ी चाल छोड़ दै
सूधी चाल चलायजा रे, छोरा नंद जू के।
ऐंठो ऐंठो कितकूं डोलै
नेंक लटक दिखायजा रे, छोरा नंद जू के।।

------o------

यशोदा मैया लालाय पालने झुलावै।।

हीरा मोती जड़्यो पालनों, रेशम डोर लगावै।
रंग बिरंगे लिये खिलौना, लाला को दिखरावै।
लै हाथन झुनझुना बजावै, चुटकी लै चटकावै।
कबहूं लालाय गीत सुनावै, हंस हंस ताहि सुनावै।
किलकि किलकि हरि पलना झूलै, गोपीं बलि बलि जावैं।

बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
वो कितनो मोय तरसावै है।।

ब्रज की गलियन भटक रही मैं,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
वह मोते रूप छिपावै है।
टेरत टेरत हार गई मैं,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
नाय सुनवे को ढोंग बनावै है।
ठोकर लगी और जाय गिरी मैं,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
नाय अचकैं मोय उठावै है।
या छलिया कूं करूं सूधरो,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
बरसाने में लगन लगावै है।।

ठाड़ो रहियो रे श्याम मैं आऊँगी।।

पनिंया भरन मैं घर ते निकसी
रीती कैसे जाऊँगी, ठाड़ो रहियो रे..।
बंशी बजैयो गैया चरैयो
नेक न देर लगाऊँगी, ठाड़ो रहियो रे..।
सास ननद ते बछरा के मिस
पानी पियायवे लाऊँगी, ठाड़ो रहियो रे..।
मेरी सौं तू ह्यांई रहियो
तेरी सौं मैं आऊँगी, ठाड़ो रहियो रे..।
मेरे मन की राख लाड़िले
मैं तेरे गुन गाऊँगी, ठाड़ो रहियो रे..।।

------o------

लगन ऐसी लागै कुँवर कन्हैया।।

नाम तिहारो पल-पल लेऊं,
पीऊ-पीऊ जैसे रटत पपैया, लगन ऐसी..।
छूटै ना यह लगन तिहारी,
जैसे पतंगा अगिन जरैया, लगन ऐसी..।
आंसू बहवै तुमरे मिलन कूं,
जैसे मेहा झर बरसैया, लगन ऐसी..।।

ऐयो ऐयो मेरे घर रे सांवरे।।

रे सांवरे मेरे बागों में ऐयो,
ऐयो फूल चुनैयो रे, रे सांवरे।
रे सांवरे यमुना तट पै ऐयो,
ऐयो चीर चुरैयो रे, रे सांवरे।
रे सांवरे मेरे खिरकों में ऐयो,
ऐयो दूध दुहैयो रे, रे सांवरे।
रे सांवरे तू पनघट पै ऐयो,
ऐयो गगरी उचैयो रे, रे सांवरे।
रे सांवरे मेरे महलों में ऐयो,
मेरी सेजों पै ऐयो रे, रे सांवरे।।

------o------

हंस हंस कण्ठ लगाय लै पियरवा।।

काहे मोते रुठ्यो नाहिं बोलै
मीठी-मीठी बतियाँ बनाय रे,
रस भरी बतियां प्यारी लागैं
बोल बोल मोते बोल पियरवा।

मरि-मरि जांऊ तेरी बात सुनन कूं
बतियन रस बरसाय रे,
काहे अपनी आँख चुरावै
नैनन नैन मिलाय रे पियरवा।
सांवरी सुरत तेरी मेरेमन मोह्यो
मुख छवि तनक दिखाय रे,
श्याम पियरवा नंदकुवरवा
चरनन ते लिपटाय लै रे पियरवा।।

------o------

ये गजरा फूलन को पहनाऊंगी तोहे श्याम।।

रंग बिरंगे फूल गूंथ के,
आज मैं सजाऊंगी तोय श्याम।
बेला जुही गुलाब चमेली,
चंपा धराऊँगी तोपै श्याम।
कमल केवड़ा कदम मोंगरा,
खसहू लगाऊँगी तोपै श्याम।
पत्रावली करुं चंदन की,

इत्र छिरकाऊँगी तोपै श्याम।
ऐसी माला मैं पहराऊँ,
आज बिकवाऊँगी तोहै श्याम।।

------o------

यशुदा के छैया आजा कदम के नीचे।।

मोर मुकुट सिर लहरा लेवै,
लट लटकाय जा कदम के नीचे।
कोयलिया की कूक, कूक कें,
मोहि बुलाय जा कदम के नीचे।
दधि बेचन मैं घर ते निकसी,
डगर में पाय जा कदम के नीचे।
हरे बांस की बांसुरिया तेरी,
मधुर बजाय जा कदम के नीचे।
बूँदन बरसै कारी कमरिया,
तनक औढ़ाय जा कदम के नीचे।
पनघट पै न्हायवे मैं जाऊं,
यमुना पै पाय जा कदम के नीचे।।

यशुदा के छैया बहुत नचाई मोय।।

भरी मटुकिया मेरे सिर पै
गेरी आय न जाने कितते
यशुदा के छैया अचक गिराई मोय।
ग्वाल बाल लै घर में आवै
बंदर हू संग-संग लै आवै
यशुदा के छैया बहुत डराई मोय।
पकर एक दिन मात दिखायो
मेरे पिय को रूप बनायो
यशुदा के छैया बहुत लजाई मोय।।

------o------

बलिहारी तेरी बतियां प्यारी बड़ी रिझवार।।

आजा रे आजा लाला मेरे अंगनवा
बलिहार जब मांगै मखनियां तू हाथ पसार।
मैं जो हठीली तू भी हठीलो
बलिहार रस समझै कोई रसीलौ रसदार।

जब तू उरझै दान मान कूं
बलिहार जब पकरै मेरी सारी को किनार।
रस की पैनी मार दुधारी
बलिहार हिय चीरै घायल करै आर पार।।

------o------

ठाड़ो यहाँ कहा करै नंद के ठगैल,
आड़ो हैकें काहे रोकै मेरी गैल।।

हट जा रे छाड़ दै रे मेरी गली
कारे भंवरा क्यों घेर्‌यो नरम कली
नेकहुं हटै न ये तो बड़ो री अड़ैल, आड़ो..।
जित मैं जाऊं तित ही धावै
घूंघट के सामई वह आवै
सैन चलावै मीठे ऐसो भारी छैल, आड़ो..।
अचरा खैंचै और मुसकावै
घूंघट खोल कछु कहि कहि जावै
ऐसो तो कहूं ना देख्यो संग लगैल, आड़ो..।।

------o------

मोहन काहे को पकरी बैंया।।

तुम तो रसिया भंवरा जैसे, डोलत रस के लैंया।
प्रीति रीति ना जानों छैला, करत फिरत लरकैंया।
बांह पकर कें कठिन निभानो, भंवरा फूल उड़ैया।
हमरी तो हम ही इक जानैं, कैसी है तरसैंया।
जब-जब घटा उमड़ बरसै झर, विरहा मन लहरैंया।
हे घनश्याम श्याम तुम घन हो, रहो सदा बरसैंया।।

------o------

आवो रे कुंवर कन्हाई, सांवरे तोकूं नंद दुहाई।।

जो तू आवै कान्हा पीरी फाटै, मिलूंगी दह्यो चलाई
जो तू आवै कान्हा सुरज ऊगे, मिलूंगी पनघट जाई
जो तू आवै कान्हा तनक चढ़े दिन, मिलूंगी यमुना न्हाई
जो तू आवै कान्हा बीच दुपहरी, मिलूंगी पनघट जाई
जो तू आवै कान्हा सांझ की बिरियां, मिलूंगी गाय दुहाई
जो तू आवै कान्हा रैन अंधेरी, मिलूंगी सबन सुवाई।।

------o------

बन बन ढूंढूं सांवरिया, ऐसी है गयी बावरिया।।

ताल तलैयन में ढूंढूं, जमुना के सब तट पर ढूंढूं,
लहरन ढूंढूं सांवरिया, ऐसी है गई बावरिया।
कुंजन-कुंजन में ढूंढूं, गलियन-गलियन में ढूंढूं,
कदमन ढूंढूं सांवरिया, ऐसी है गई बावरिया।
पर्वत-पर्वत पर ढूंढूं, गोवर्द्धन ऊपर ढूंढूं,
चोटी ढूंढूं सांवरिया, ऐसी है गई बावरिया।
दिन सूरज धूपन में ढूंढूं, चंदा तारे में ढूंढूं,
रैना ढूंढूं सांवरिया, ऐसी है गई बावरिया।
जागत ढूंढूं सोवत ढूंढूं, सांझ सवेरे वाको ढूंढूं,
सब पल ढूंढूं सांवरिया, ऐसी है गयी बावरिया।।

------o------

तो ते नैना जो मिलायो, हल्ला है गयो सबरे गाम।।

घाट बाट में ताने मारै
गूजरिया ने तो अपने बस में कर लीये हैं घनश्याम।
घर के बाहर के सब टोकें
मोतें कहैं दिवानी ऐसी है गई मैं बदनाम।
ये लगवारिन है मोहन की
याको लगवारो मतवारो रसिया घनश्याम।।

देखो छांड़ो न पकरो हाथ,
नई री मैं तो नई आई अनजानी।।
मानों-मानों कान्हा छोड़ो डगरिया
कैसे छुड़ाऊं (हाय) बीच डगरिया
हट जाओजी छोड़ो मेरो साथ, नई री..।
कैसो निडर मेरो अंचरा पकरै
मुख देखन घूंघट ते झगरै
देखो कारो करो न मेरो माथ, नई री..।।

------o------

मेरे मन में बस्यो कन्हैया, नंद लाल मुरलिया वारौ।।
जैसे दूध मिलै पानी में, ऐसो मिल गयो प्यारो,
श्याम बिना सब दुनियां सूनी, कैसे जीऊं मेरी मैया।
सांवरी सूरत आँखन में बसी, जैसे कजरा कारो,
मोहनी सूरत मन पै छाई, जो यशुदा को छैया।
चारों ओर कृष्ण को देखूँ, श्याम आँख को तारो,
कृष्ण हमारो प्राण भयो है, जो दाऊ को भैया।
मैं पूछूं ऐ मेरे मनुवा, क्यों बिक गयो बजमारौ,
अब तू काहे रोमत डोलै, ढूंढै वंशी बजैया।।

ऐयो रे मेरी डगरिया, अरे प्यारे सांवरिया।।
तिखने पै चढ़ देख रही मैं
आवत दीख पर्‌यो कदमन में,
मोर पंख चमक्यो माथे पै
दुरइ ते मैंने सुनी बंसुरिया।
तिखने ते मैं उतर कन्हाई
बछरा बाहर दिये भजाई,
बछरा पकरन के मिस जाती
समझ न पाई सासरिया।
ठाड़ी ठाड़ी बाट देखती
कबहू बछरा पकरन जाती,
पकर कबहूँ आगे दौराती
ऐसी कर रही बावरिया।
कबहू घूंघट खोल देखती
कबहू घूंघट ते मुख ढकती,
कबहू ऊँचे टेर लगाती
बह रही आँखन आंसुरिया।।

अरे मान ले घनश्याम, कर जोरुं छीऊं तेरे पाम।।

या बाखर में मैं ही अकेली
ना घर की ना कोई सहेली
चरचा करेंगी सब ब्रजवाम।
पनघट पै सब सखियां बोलें
हंस हंस बात मरम की खोलैं
कहाँ तेरो श्याम बता री भाम।
कजरा तैंने कैसो लगायो
तेरे नैनन श्यामहि छायो
सखी तू है गयी री बेकाम।
रात नींद न आई तोकूं
बाट देखती रही कौन कूं
सखी तू बिक गई बेदाम।
कूंआ पै यमुना पै टोकें
तानों मार राह में रोकैं
श्याम मिलनियां धर्‌यो मेरो नाम।।

------o------

सुन री यसोदा मैया री,

तेरो कैसो कन्हैया, तेरो कैसो कन्हैया।।
राह चलत मेरो अंचरा खेंचै
लूंगौ मोल कहा तू बेचै
ओढ़ै मेरी चुनरिया री, तेरो कैसो कन्हैया..।
वंशी ते मेरो खेंचै जूरो
छूवै मेरो कंचन चूरो
पकरै नरम कलैया री, तेरो कैसो कन्हैया..।
राह चलत मेरी बैंया पकरै
बिना बात के मोते झगरै
(क्यों) गारी दई लुगईया री, तेरो कैसो कन्हैया..।
मेरे आगे पीछे डोलै
लै लै नाम ये मोते बोलै
चल री दुहूँ तेरी गैया री, तेरो कैसो कन्हैया..।
पनघट पै ये ठाड़ो पावै
पानी भर भर मोय उचावै
पीछे घट लुढ़कैया री, तेरो कैसो कन्हैया..।।

श्याम तू बड़ौ अनाड़ी रस कौ।।

जब मैं बैठूं सखिन के ढिंग
हाय तू काहे बुलावै मोकौं, श्याम तू..।
तेरी मेरी बात चलै है
रह्यो ग्वारिया तू गायन कौ, श्याम तू..।
राह चलत अंचरा मेरो खैंचै
ना जानै तू भेद मरम कौ, श्याम तू..।
कबहू लै लै नाम पुकारै
सुन हंसै सब मोकौं तोकौ, श्याम तू..।
पनघट ही पै तू बतरावै
नेंक न सोचै भीर सखिन कौ, श्याम तू..।
कारी कामर ओढ़ै ऊपर
तैसोई है कारो तन कौ, श्याम तू..।
चोरी के सब काम हैं कारे
रसिया रस कौ कारौ मन कौ, श्याम तू..।
बंशी में लै नाम बुलावै
लोभी भंवरा अपने रस को, श्याम तू..।।

मै तो तेरे हाथ बिकानी, औ जादूगर सांवरिया।

प्यार करै चाहे ठुकरावै, चंचल नटखट नागरिया।।
भूल गयी ये दुनियां सारी
सुध-बुध भूली तन की भारी
सुनूं न मैं काहू की गारी
मैं तो रंग रही तेरी यारी
चाहे मारै चाहे जिवावै, तू अंधे की लाकरिया।
तेरे नैनों की हों मारी
बांके रसिया औ गिरिधारी
नैनों की मदिरा को पीके
डोल रही लै के मदभारी
चाहे बुलाले चाहे हटादे, मैं तो तेरी बावरिया।
सोऊं तो सपने में देखूं
जागूं तो भी तुम को देखूं
लता-पतन में, वन कुंजन में
यमुना की लहरन में देखूं
पल-पल तेरो नाम रटूं मैं, पड़ी हूं तेरी डागरिया।।

दिखाओ गिरिधारी दरद की मैं मारी।।

नैना मेरे बस रह्यो, मोहन नंद को लाल,
नैंक टरै ना नैन ते, कसकत है सब काल।
दिखाओ गिरिधारी..।

जित देखूं तित श्याम ही सब जग है गयो श्याम,
मोते कहें सब बावरी, बैरी है गयो गाम।
दिखाओ गिरिधारी..।

लगी कटारी नेंह की, हियरे को गई चीर,
हाय श्याम करती रहूँ, नैनन बरसै नीर।
दिखाओ गिरिधारी..।

श्याम हियो श्याम ही धड़कन, श्याम श्वास औ प्रान,
श्याम ही दरपण, श्याम ही नैना, ऐसी भई पहचान।
दिखाओ गिरिधारी..।

नैनन की प्याली करुं, और श्याम रुप को नीर,
भर-भर प्याली पीमती, अंसुवन भीजै चीर।
दिखाओ गिरिधारी..।।

------o------

जब ते देख्यो बलबीर मन कूं प्यारो लगै।

मोहि चैन न मन में धीर दुनियां बैरी लगै।।
एक दिना मैं निकसी घर ते
आय मिल्यो वह बीच गैल ते
नैनन को लाग्यो तीर, मन कूं प्यारो लगै।
बंशी बाजै दूर कुंज में
मेरे हूक उठै है मन में
ये कठिन प्रेम की पीर, मन कूं प्यारो लगै।
रात दिना मैं टेरूं श्यामहि
लागै न मन घर परिवारहि
नहिं भावै घर की भीर, मन कूं प्यारो लगै।
रात-रात भर जागूं बैठी
उठ-उठ देखूं कबहू लेटी
मेरे नैनन बरसै नीर, मन कूं प्यारो लगै।।

------o------

मैं तो सांवरिया के जाऊँगी, चाहे रोकै सबरी दुनियाँ।

पीहर सासरो सब मिल रोकैं
मैं ऐसी ही इठलाऊँगी चाहे रोके..।
ना मैं प्यार करूँ करवाऊँ,
वाही ते नेह जुराऊँगी चाहे रोके..।
सुरत सांवरी प्यारी अँखियां
नैनन मांहि बसाऊँगी चाहे रोके..।
काहू ते न बोल बतराऊँ
मैं तो वाही ते बतराऊँगी चाहे रोके..।
देखूं ना काहू की सूरत
वाही ते नैन लड़ाऊँगी चाहे रोके..।
कृष्ण नाम की रटन लगाऊँ
मैं गाऊँगी और नचाऊँगी चाहे रोके..।
कुंजन-कुंजन में ढूंढूंगी
तड़पूं और तड़पाऊँगी चाहे रोके..।
ब्रज की धूर सिंदूर बनाऊँ
मैं अपने शीश चढ़ाऊँगी चाहे रोके..।
विरह अगिन में सब तन जारुं
मैं ब्रज की रज बन जाऊँगी चाहे रोके..।।

मोहि बावरी कहैं सब गाम की,
मैं तो चेरी भई कारे कान्ह की।।

सिर मोर मुकुट लहरावै है
कानन कुण्डल झलकावै है
तिरछी चितवन मुसकान की, मैं तो चेरी..।
कहुँ गैल गिरारे मिल जावै
हंस हंस के मीठो बतरावै
नई नई भई पहचान की, मैं तो चेरी..।
कबहूँ वह आय दुहावै गैया
यशुदा को बारो सो छैया
कहुँ बात करै दधि दान की, मैं तो चेरी..।
कबहूँ वंशी बाजै कदमन
डस गई जैसे कारी नागन
जहरीली मीठे तान की, मैं तो चेरी..।
कबहूँ नाचै लै गलबैंयन
रस बात करै नैनन सैनन
कहा कहूँ रसीली बान की, मैं तो चेरी..।।

दुनियां भर के दुख सह लूंगी,
तेरो विरह सह्यो न जाय।।

ए रे कारे नंद दुलारे
माथे मोरा पंखन वारे
नैनां तेरे औगुनगारे
मारैं बान करैं ये घायल, तौ हू मनको भाय।
प्रीति तेरी कारी सी नागिन
डस गई जहर डार गई बैरिन
कारो रंग रह्यो मेरी अंखियन
अंग-अंग में जहर विरह कौ, लहर-लहर लहराय।
बंसी तो बंसी सी है गई
मन मछली कूं हर के लै गई
मीठी कांटे सी वह चुभ गई
तड़फत डोलूं हिरनी सी,वन-वन कर-कर हाय-हाय।
सजन सनेही सब ही छूटे
पीहरिया सासरिया रूठे
लाज बड़ाई बंधन टूटे
जागत सोवत स्यामहि देखूं, ऐसो रंग रह्यो छाय।।

मेरे आगे पीछे डोले री, वो नंद महर को बारो।।

जैसे भवरा उड़ै मालती
ऐसो उड़तो डोलै री, वो नंद महर..।
महकै जैसे नील-कमल सों
मेरो चारो घां रस घोलै री, वो नंद महर..।
कबहू हेला देय दूर सों
नाम लेय कछु बोलै री, वो नंद महर..।
कबहू सामइ आय सखी री
घूंघट झांकत खोलै री, वो नंद महर..।
पीताम्बर लै अपने हाथन
मेरी छांह करतो डोलै री, वो नंद महर..।
मुकुट छांह ते चरन छुवावै
प्रीति करै अनमोलै री, वो नंद महर..।
नाचै गावै नैन चलावै
जोवन को करतो मोलै री, वो नंद महर..।।

------o------

मैं तो श्याम मिलन को जाऊं, बैरिन बाजै पायलिया।।

ब्रज के बासी सब हैं सोये
गहरी नींदन में हैं खोये
मीठे सपनन में हैं पोये
मैं जागी हूँ श्याम विरहिणी, उड़ गई नींदरिया।
दूर बजै बंशी मोहन की
यमुना तट छैंया कदमन की
फैल रही चांदनी चांद की
मोय बुलाय रही है हरि की, मीठी बांसुरिया।
जागै ना कोई घर वारो
खोल्यो घर को अचक किवारो
चलत झूम रह्यो फुंदना नारो
प्रेम मगन भागी नैनन ते, बह रही आँसुरिया।
लिपटी जाय श्याम प्यारे सों
जैसे दामिनि घन कारे सों
ऐसी मिली मुकुट वारे सों
लेटी अंक निशंक श्याम भुज, की कर तकिया।।

नैना चुभे पीर न जानैं, जाके कांटो चुभै सोई जानैं।।

एक दिना पनघट पै मिल गयो
आय अचानक गगरी भर गयो बिन जाने पहचानै।
एक दिना मेरी गैया दुह गयो
दोहनी दूध भरी सिर धर गयो बिना बोलै ही पहचानै।
एक दिना बरसत में आयो
अपनी कामर मोय ओढ़ायो बिन पूछे ही पहचानै।।

------o------

सांवरिया मोते मत अटकै बजमारे,

मत अटकै बजमारे, मेरी गैल छोड़ दै दइयारे।।
आय रही है पीछे ते ननदिया, अब ही बादर फारै।
मोय देख तू सैन चलावै, और भरै सैंकारे।
रसिया गावै नाच दिखावै, नांचै ठुमका मारै।
लिपटत आवै हंसतो हंसतो, घूंघट देय उघारै।
अब ही तो गोने की आई, काहे जुलम गुजारै।
जाय कहूंगी घर सासू ते, सजन माजनों झारै।

------o------

मेरे धुकर पुकर जिय होय रे,
हो सांवरे, तू गलियन में आना छोड़ दे।।
तेरो मोर पंख सिर ऊपर
मेरे लहर-लहर जिय होय रे, हो सांवरे..।
तेरो घूम घुमारो जामा
मेरे झहर-झहर जिय होय रे, हो सांवरे..।
तेरे पीताम्बर पै पटका
मेरे फहर-फहर जिय होय रे, हो सांवरे..।
तेरे गरवा मोती माला
मेरे छहर-छहर जिय होय रे, हो सांवरे..।
तेरे पांयन घुंघरू बाजैं
मेरे छनन-छनन जिय होय रे, हो सांवरे..।
तेरे नैना विष के बानन
मेरे भहर-भहर जिय होय रे, हो सांवरे..।
तेरी मुसकन बनी कटारी
मेरे हहर हहर जिय होय रे, हो सांवरे..।।

------o------

कैसे जाऊं बचके कान्हा ठाड़ो अड़के,
रोकै गैल हमारी मोहना सखी-२।।
कदमन छैंया कृष्ण कन्हैया
बीच खड़ो यशुदा को छैया
कान्हा मंद मुसकावै, चित को चुरावै, रोकै..।
गैल छोड़ चलूं मन नाय मानै
बिन देखे नैना तरसाने
श्याम बंशी बजावै, मीठे गीत सुनावै, रोकै..।
कैसी भई हाय बेचैनी
चितवन चोट बड़ी वाकी पैनी
ठाड़ी लाजन मरी, पानी की सी भंवरी, रोकै..।

------o------

काहे मोहन संग हमारे परै,
ब्रज में मेरो लै लै नाम धरै।।
सखी सहेली हांसी देवैं,
नंद को छैया तेरे पीछे परै।
कोई कहे रिझवार कृष्ण की,
याही ते बन ठन निकरै।

कोई कहै ये श्याम मिलनियां,
नहिं श्याम बिना याय चैन परै।
कोई कहे याको यार कन्हैया,
(याकी) चन्द-चकोर सी प्रीति जुरै।
कोई कछू कहै सुन सजनी,
मेरी प्रीति न नेंक टरै।।

------o------

सुनलै री यशोदा मैया,
ऊधमगारो री तेरो कृष्ण कन्हैया।।

भोर सवेरे बछरा ढीलै सबरो दूध चुखावैं,
औगुनगारो री यशोदा तेरौ छैया।
भर गगरी पनियां लै आई, पाछे ते लुढ़कावै,
भगजा बैरी गायन चरवैया।
टोल-टोल गोपी दधि लैकें, निकसी कदम की छैया,
ऊपर ते लै लेवै दधि भरी मथनियां।
ग्वाल बाल लै घर में आवै, माखन चोरै खावै,
पी जाय री दूध मलैया।
संझा कर रही दीयो बाती, पीछे खड़ौ बुझावै,
अंचरा खैंचै री माखन चुरवैया।।

ये तो मोहन की लगवार, ऐसो हल्लो भयो मोहल्लो।

गैलगिरारे बाट तकत है
श्याम श्याम की रटन लगी है
जाको सांवरिया है यार, ऐसो हल्लो..।
यमुना तट पै बैठे कबहू
रीती गगरी डोलै कबहू
ये तो सबरी भई गमार, ऐसो हल्लो..।
कबहू सिर पै दधि मटकी लै
बेचूं गिरिधर कोई लै लै
ये तो डोलै गली गिरार, ऐसो हल्लो..।
रात विरात घरन सों भाजै
जहाँ श्याम की वंशी बाजै
याकौ छूट गयो घर द्वार, ऐसो हल्लो..।।

------o------

मेरो प्यारो है सांवरिया, दुनियाँ बैर करै।

जब जब देखूं मैं सांवरिया, मन कूं चैन परै।।
मैं तो है गई श्याम दिवानी, श्याम मेरे मन भायो,
नैनों में हियरे में मेरे, रोम-रोम में समायो,

नैनों का तारा सांवरिया, दुनियाँ देख जरै..।
रात-रात उठ बाट तकूं मैं, मोकूं नींद न आवै,
कैसे कहूं कौंन ते बोलूं, विरहा कौन बुझावै,
मीठी बाजै रे बांसुरिया, धीरज कौन धरै..।
जा लिपटूंगी ऐसे जैसे, बादर से बीजुरिया,
भूल गई मैं सारी दुनियां, ऐसी भई बावरिया,
बैरी पीहर औ सासुरिया, दुनियाँ नाम धरै..।।

------o------

बाट तकूं मैं तेरी श्याम, बिरज की गलियां।।

दिल मैं दरद और आँखो में आँसू
टेर्यो करुं मैं आठों याम बिरज की गलियां।
छोड़ दई सब सुध-बुध तनकी
भूली जगत के काम, बिरज की गलियां।
कृष्ण कन्हैया श्याम गोविन्दा
लेती फिरुं ये नाम, बिरज की गलियां।
अँखियां थक गई ढूढ़त ढूढ़त
डोलत थक गये पाम, बिरज की गलियां।

कब आओगे कुंज बिहारी
फूल खिले ब्रज धाम, बिरज की गलियां।।
सजी सजाई नटवर झांकी
देख बिको ब्रजधाम, बिरज की गलियां।।

------o------

मैं तो जोगनियां बन जाऊंगी,
मेरी लगन लगी गिरिधर सौं।।

ना चाहिए मोय कुटिया लुटिया, ना चाहिए मोय दुनियाँ,
मैं तो लता तरे रह जाऊँगी, मेरी लगन लगी..।
ना चाहिये मोय गहना गुरिया, ना मैं साज सिंगारुं,
मैं तो फटे चीथरा पहरुंगी, मेरी लगन लगी..।
ना चाहिए मोय लंहगा सारी, ना चाहिए मोय फरिया,
मैं तो गूदरिया ही ओढ़ूंगी, मेरी लगन लगी..।
ना चाहिए मोय पलका खटिया, ना चाहिए मोय तकिया,
मैं तो धरती पै सो जाऊँगी, मेरी लगन लगी..।
ना चाहिए मोय पूरी हलुवा, ना चेहिए मोय लड़ुवा,
मैं तो भूखी ही रह जाऊँगी, मेरी लगन लगी..।।

गोरी कब तक नैन छिपावैगी,
तेरे पीछे पर्‌यो कन्हैया।।

तेरे हित यमुना पै बैठ्यो
तू यमुना न्हायवे जावैगी, तेरे पीछे पर्‌यो..।
तेरे हित खिरका घुस बैठ्यो
तू दूध दुहायवे जावैगी, तेरे पीछे पर्‌यो..।
आसन मार कुंआ पै बैठ्यो
तू पनियां भरवे जावैगी, तेरे पीछे पर्‌यो..।
आसन मार राह में बैठ्यो
तू दही बेचवे जावैगी, तेरे पीछे पर्‌यो..।
आसन मार बाग में बैठ्यो
तू फुलवा तोरन जावैगी, तेरे पीछे पर्‌यो..।।

------o------

काउ दिन सबरी अकड़ झराय दूंगी,
ओ कृष्ण मुरलिया वारे।।

पोली तेरी बांस बसुरिया
फूंकत डोलै बन्यो सांवरिया
काउ दिन वंशी तोर मरोरूँगी, औ कृष्ण..।

हंस-हंस मोपै आँख दिखावै
धौंस दिखावै औ डरपावै
काउ दिन गैल बंद करवाय दूंगी, औ कृष्ण..।
यशुदा मैया ते कह आई
जातेई तेरी होय पिटाई
काउ दिन ऊखल ते बंधवाय दूंगी, औ कृष्ण..।
मत मोते लिपटै औ चिपटै
बिना बात के मोते अटकै
काउ दिन मोहन हाथ लगाय दूंगी, औ कृष्ण..।।

------o------

आये-आये मन मोहन हमारी गलियां।।

जब मनमोहन बागों में आये,
खिल गई फूलन की डरियां।
जब मनमोहन गलियों में आये,
महक उठी सबरी गलियां।
जब मनमोहन द्वारे पै आये,
केला की लटकैं फरियां।

जब मनमोहन अंगना में आये,
बिछ गई फूलन की कलियां।
सेजन गिलम गलीचा तकिया,
मिल खेलत हैं रंगरलियां।।

------o------

आओ बिहारी मेरे अंगना आओ-आओ बिहारी।।

हम टेरत तुम आवत नाहीं
जानों प्रीति के ढंग ना, आओ बिहारी..।
गायन घेरत रहे ग्वारिया
सुनों नंद जू के छंगना, आओ बिहारी..।
तेरे नैनन की हों मारी
बंशी सुन भई मंगना, आओ बिहारी..।
आधी रात चमक रही बिंदिया
रह-रह बाजै कंगना, आओ बिहारी..।
मीठो माखन मीठी मिसरी
खाओ-खाओ मरे अंगना, आओ बिहारी..।
फूलन सेज अतर सों छिरकी
सोओ मेरे संग ना, आओ बिहारी..।।

जाने कब मेरे घर आवैगो, मोहन मुरली वारो।।

ऊँची अटरिया पचरंग पलका
जाने कब वह चढ़कै आवैगो, मोहन मुरली..।
आधी पै मेरी लाल किवरिया
जाने कब वह खोलकें आवैगो, मोहन मुरली..।
जोवन फूल रह्यो फूलन ते
जाने कब वह भंवरा आवैगो, मोहन मुरली..।
रात रसीली सजन रसीलो
जाने कब रस दैवे आवैगो, मोहन मुरली..।
सोय रहे सबरे घर वारे
जाने कब वह आय जगावेगो, मोहन मुरली..।।

------o------

हो मोहना मेरे बागों में ऐयो।।

फूल रहीं बेला की कलियां,
हो मोहना मेरी चोटी गुहियो।
फूल रही कदमन की डारी,
हो मोहना मेरे झुमके बनैयो।
फूल रही डाली गुलाब की,

हो मोहना मेरो गजरा बनैयो।
चंपा और चमेली फूली,
हो मोहना मेरों हार बनैयो।
रायबेल मालती मोंगरा,
हो मोहना मेरी तगड़ी बनैयो।
सोन जुही की कलियां लैकैं,
हो मोहन मेरी पायल बनैयो।।

------o------

नजरिया मत मारै, मर जाऊँगी।।

श्याम तेरे नैना बड़े नुकीले
कोर मेरे गड़ जायेगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेरे नैना बड़े कजरारे
रेख मेरे चुभ जायगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेरे नैना हैं मदमाते
बावरी है जाऊंगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेरे नैना हैं खंजन से
संग तेरे उड़ जाऊंगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेरे नैना हैं मछली से
संग तेरे बह जाऊंगी, मर जाऊँगी।।

सांवरिया होलै बोल, पिछवारे वारी सुन लेंगी।।

पिछवारे वारी है बैरिन
इत में देखै टेढ़ी आँखिन
कानन में रस घोल, पिछवारे वारी..।
जो कहूं देखैगी तोहि प्यारे
कह देगी गामन में सारे
वह तो पीटैगी ढोल, पिछवारे वारी..।
रह्यो गमर्रा तू सांवरिया
आखिर तो गायन को ग्वारिया
प्रीति गांठ मत खोल, पिछवारे वारी..।
हौलै हौलै तू बतराय लै
अपनी लागी लगन बुझाय लै
रह्यो याही बात को डोल, पिछवारे वारी..।।

------o------

अइयो-अइयो कान्हा यमुना किनारे आधी रात,
कैसे जीऊं मरी मैं जात।।

यमुना किनारे कदम हैं फूले
झूलूंगी सारी रात, कैसे जीउं..।

यमुना किनारे बेला चमेली
फूल खिले हैं हरे पात, कैसे जीउं..।
यमुना किनारे खिली चांदनी
तो बिन नेक न भात, कैसे जीउं..।
यमुना किनारे मीठी लहरिया
मीठी बह रही बात, कैसे जीउं..।
यमुना किनारे विरहा सतावे
पजरे जात हैं गात, कैसे जीउं..।।

------o------

तोते नेहा लगाय कहा पायो रे।।

नैन मिलाये जनक नंदिनी,
वन में भेज पठायो रे।
नैन मिलाये ब्रज की गोपीं,
आप द्वारिका छायो रे।
नैन मिलाये मीरा बाई,
जहर को प्यालो पिवायो रे।
नैन मिलाय भये बहु जोगी,
दर दर भीख मंगायो रे।।

नैना चलावै घनघोर,
बड़ौ री चित चोर, लाडलो नंद को हाय।।

नैना सों मारै, मदन सों मारै
मारै री भौंह मरोर, बड़ो री चितचोर..।
कैसे छिपाऊं गोरो बदन
नाय छिपै घन चंद चकोर, बड़ो री चितचोर..।
कहां छिपाऊं जोवन की थाती
खिले फूल सुगंधन बोर, बड़ो री चितचोर..।
कहां छिपाऊं ये बात रसीली
चलै नदिया पाथर फोर, बड़ो री चितचोर..।
कहाँ छिपाऊं नैन चमकीले
ऐसे चमकैं तीखे कोर, बड़ो री चितचोर..।।

------o------

चढ़ी रे अटरिया पै कान्ह बुलावै।।

कबहू ऊपर कबहू नीचे,
चकई सी वह फिर-फिर जावै।
पिंजरा की मैना सी है गई,
उड़नों चहै उड़न नहिं पावै।

भई पतंग वह उड़त अटा पै,
हाथन अंचरा लै फहरावै।
रस में मगन भई है गोपी,
अंखियन निरख-निरख अकुलावै।
नंदलाल को नाम न लेवै,
औरन के मिस टेर लगावै।
वन में मेरी गाय भाज गई,
कोई लै मोहि पकर दिखावै।।

------o------

कान्हा कारे तुम तो क्यों भये।।

तेरी मैया यशुदा है गोरी,
नंदबाबा गोरे रंग छये।
मात पिता गोरे तुम कारे,
कहा ढंग यामें तो ढये।
तुम हमते सांची कहो लाला,
कहा नैना नीचे को नये।
कछु यशुदा की ही कचाई लगै,

मैया ते क्यो न पूछ लये।
हमने तो सुने वसुदेव पिता,
यह गरग मुनी कहते जो गये।
झगरो कैसे द्वै बापन को,
याको निरबेरो क्यो न दये।।

------o------

सुन्दर श्याम सलोना, सलोना मेरी सजनी।।

प्यारो प्यारो नंद दुलारो
खावै माखन लोना, लोना मेरी सजनी।
मोर पंख घुंघरारी लट पै
हंस रह्यो नैनन कोना, कोना मेरी सजनी।
नटवर की छवि देखै जो कोई
है जाय ब्याह औ गोना, गोना मेरी सजनी।
याकी वंशी तान सुनै जो
लोकलाज दै खोना, खोना मेरी सजनी।
प्रेम बावरी गोपी डोलैं
भावै न घर भौना, भौना मेरी सजनी।।

कोई मिलाय दै नंद जू के लालन।।

वाको दूंगी अपनी नथली
दूंगी बेसर मोती लटकन।
शीश फूल माथे को दूंगी
दूंगी बेंदी चमकै चटकन।
कानन के झुमके दै दूंगी
दूंगी मुंदरी कंकण हाथन।
कड़े छड़े बाजूबंद दूंगी
हार हमेल गरे को हारन।
कमर कौंधनी हू दै दूंगी
पायल बिछुवे अनवट पायन।
एक बार दिखरावै श्यामहि
करुं न्योछावर अपने प्रानन।।

------o------

मन रम रह्यो नंद के लालन ते।।

आली री मैं वन-वन ढूंढती डोलती
मोय काम कछू ना महलन ते।

आली री मैं बिक गई जैसे उधार री
वाकी चंचल तिरछी चितवन ते।
आली री नाय भावै महल मिठाई हू
मोय काम न छप्पन भोगन ते।
आली री नांय भावै गहनों पहरनो
मोय काम न चहलन पहलन ते।
आली री नाय भावै सासरो पीहरो
मन फट गयो जग के जालन ते।
आली री नहिं नैनन निंदिया आवही
पूछत डोलूं वन डालन ते।।

------o------

घूंघट में ते देख-देख पीछे आवै चल्यो नंदलाल।।

तो पै भटू लटू है ऐसो, जैसे भंवर कमल की माल।
तेरे आगे पीछे आवै, तेरे झांकै गोरे गाल।
तेरे चरनन पै मुकुटन की, छांह छुवावै गोपाल।
तेरी ब्यार करै पीरे पट, संग चलै मटकती चाल।
राधा राधा गावै झूमै, नांचै दै-दै ताल।।

रैना कारी नागिन लागै, सूनी है गई सेजरिया।।

सोऊं तो निंदिया नाय आवै
जागूं तो जियरा घबरावै
बिना मिले पिय चैन न आवै
सपने हू पिय नहिं पाऊं, बैरिन भई नींदरिया।
श्याम बिना सब जग है सूनों
छिन छिन विरहा बाढ़ै दूनों
आवै सजन तो है जाय पूनों
तकिया गिलम गलीचे चुभ रहे जैसे कांटरिया।
वन में फूले फूल अनोंखे
बिना सजन ये लगें न चोखे
प्रीति न करियो कोई धोखे
वन वन डोलूँ खोई खोई, ढूंढूं सांवरिया।
आँसू नेंकउ रुकैं न रोके
गली-गली सब रोकें टोकें
मेरी दसा देख सब चोंके
भूली सुध बुध खान पान सब, है गई बावरिया।।

यशुदा को छैया बड़ौ रसिया री,
बड़ौ रसिया, बड़ौ रसिया।।

जो कोई आवै नई नौधरी
पीछे डोलै संग लगिया री, बड़ो रसिया..।
जो कोई घूंघट मारै निकसै
घूंघट खोल करै बतियां री, बड़ो रसिया..।
जो कोई जावै पनघट इकली
गगरी लैके भरै पनियां री, बड़ो रसिया..।
जो कोई जावै खिरक दुहावै
आपई दूध दुहै गैया री, बड़ो रसिया..।
जो कोई पावै कुंजन इकली
पैंया पर करै रस घतियां री, बड़ो रसिया..।।

------o------

मेरे हियरे में आग लगाय रे,

हो लाड़ले तू बंशी बजाना छोड़ दे।।
मैं भोरइ दही बिलोऊं
मेरी लोनी पिघली जाय रे, हो लाड़ले..।

मैं धार काढ़वे जाऊं
मोपै थन नाय पकर्‌यो जाय रे, हो लाड़ले..।
मैं पानी भरवे जाऊं
मोपै पानी भर्‌यो न जाय रे, हो लाड़ले..।
मैं बैठ रसोई करती
लकड़ी आली भई जाय रे, हो लाड़ले..।
तेरी वंशी जादू है गई
मोपै परी ठगोरी आय रे, हो लाड़ले..।।

------o------

श्याम टेढ़ी नजर मत मार्‌यो करै,
मर जावैगी गोरी कोई।।

नैन बान लै व्याध ज्यों डोलै,
बिंध जावैगी गोरी कोई, श्याम टेढ़ी..।
मुसकावै या छुरी चलावै,
कैसे बचेगी भोरी कोई, श्याम टेढ़ी..।
चाल चलै या मूठ चलावै,
लुट जावैगी छोरी कोई, श्याम टेढ़ी..।

काजर रेखा है या बरछी,
मर जावैगी देख के कोई, श्याम टेढ़ी..।
वंशी है या जादू की लकड़ी,
बस होवैगी सुनके कोई, श्याम टेढ़ी..।।

------o------

मेरे हियरे में बस्यो आय नंद कौ सांवरिया।

हरि के बिन जीवन ख्वार, भई मैं बावरिया।।
पहले पहले ब्रज में आई मैं तो नई नवेली
नयो नयो ब्रज नई नई यमुना की कुंज सहेली
मोय मिल गयो वो बटमार, भई मैं बावरिया।
बीच गैल में ठाड़ो ह्वै कै बंशी मधुर बजाई
ऐसी मीठी तान रसीली मेरे मन को भाई
मेरे है गये नैना चार, भई मैं बावरिया।
अँखियां बड़ी नुकीली जाकी कोर चुभी मेरे मन में
मुसकन की तो लगी कटारी जहर चढ़्यो सब तन में
मैंने सब कुछ दीयो वार, भई मैं बावरिया।।

------o------

अरे मत घूंघट मेरो खोल, मैं परूं तिहारे पैंया।।
मैं अबहीं ब्रज में आई, औ नई बहू कहलाई,
अरे मोय छोड़ कहूँ जा डोल, मैं परूं..।
तू बीच गैल में ठाड़ो, नेंक तिरछो है जा आड़ो,
अरे मोते बिना बात मत बोल, मैं परूं..।
तेरी दही दान की बतियां, मैं सब जानूं तेरी घतियां,
तू करै जोबन कौ मोल, मैं परूं..।
तू बन ठन डोलै ऐसौ, बारात बिना वर जैसौ,
तैनें सब गोरी लईं तोल, मैं परूं..।
तेरी तिरछी तिरछी अँखियां, जो देखेंगी मेरी सखियां,
सब ब्रज में पिट जाय ढोल, मैं परूं..।
तेरी चितवन नेक न भावै, तू काहे को मुसकावै,
रह्यो काहे कौ रस घोल, मैं परूं..।
अब ही मैं मथुरा जाऊं, औ कंस रजा को बुलाऊं,
माखन खाय भयो है गोल, मैं परूं..।।

------o------

कान्हा चोरी करवो छोड़, सगाई तेरी है जायगी।।
बड़ो चोर नंद है महर कौ बातहु मिट जायगी,
बिन चोरी छोड़े कैसेहु नहिं भांवर पड़ जायगी।
बन्यो ठन्यो डोलै सब तेरी बात बिगर जायगी,
चोर उचक्कन के पल्ले नांय कोई बंध जायगी।
कितनेउ तिलक लगाय लै लाला नाहिं सुधर जायगी,
घर-घर माखन चोरत डोलत हांसी है जायगी।
क्वारो ही रह जायगो मन की होंसहु रह जायगी,
आगे पीछे डोलौ करियो गांठ न जुर जायगी।
पातर चाटे ते नाय मन की भूखहु मिट जायगी,
तौ लों भटकैगो जौ लों नाय राधा मिल जायगी।।

------o------

कंह ते आय गयो सांवरिया, मेरी बैयां पकरी आय।।
मैं तो चोंक परी ये कैसी मोते लगी बलाय,
नेंक परे हट जा रे मेरो घूंघट खूट्यो जाय।
मारग बीच अकेली घेरी नेंकहु ना सकुचाय,
दूर सरक जा बजमारे मोहि लाज सरम रहि खाय।
भयो नंद को तू उतपाती तेरी मति बौराय।

माखन खाय भयो मस्तानो काहू नाय गिनाय।
जितकूं घूमूं तितही जावै आड़ो-आड़ो आय,
ऊपर कारो भीतर कारो नैना रह्यो नचाय।
कबहू हा-हा खावै कबहू सैनन में मुसकाय,
कौतुक करकें हंसै हंसावै गीत रसीले गाय।।

------o------

यारी जोरूंगी मोहन ते, मेरो कोई रुकवैया नाय।।

वा देखे बिन गैल गिरारो उड़-उड़ के मोय खाय,
कबै सिरावैंगी ये अँखियां देखूंगी छवि जाय।
वा बिन चैन परै नांय मोकूं नाय डटैं घर पांय,
सास ठढ़ी मोहि गारी देवै ननदी लोना लगाय।
डोरी खेंचै सांवरो मन मेरो खिंचतो जाय,
गैल न जानूं लाड़ले मोहि अपनी गैल बताय।
कब आवैगो मुरली वारौ वन कदमन की छांह,
हिरनी जैसी डोलूं वन-वन मुरली तनक सुनाय।
मेरो मन भटकै मोहन बिन कैसेहु रह्यो न जाय,
जा भेंटूंगी बिछरो मिन्तर ऐसी ही मन भाय।।

ऐसी गल रही मैं गिरिधर बिन,
जैसे पानी परे बतासो।।

घर में सासू आँख दिखावै, ननदी करै तमासो,
बाहर के मेरे नाम निकारैं, आई बहू कहाँ सों।
घबराऊं मैं ना इन बातन, कहूं मैं मन की कासों,
मेरी अँखियन कौ वह तारो, वा बिन मरी जंहाँ सों।
जैसे-जैसे ये सब बैरी, बांधै लै मोहि फांसो,
गांठ प्रीति की है गई पक्की, ज्यों भीजै चोंमासो।
मैं तो अपने रंग चलूंगी, कितनोई करो हांसो,
पिया बिना नहि जीऊं वाते, मेरी आस उसासो।।

------o------

मार गई तानों गुजरिया, देखूंगी सांवरिया।।

घूंघट खोल उझकतो डोलै
गली गिरारे छेड़ै बोले
बंद करूँगी डगरिया, देखूंगी सांवरिया।
कारो कैसो है इतरातो
गोरो होतो तो कहा करतो

कारे की कारी कमरिया, देखूंगी सांवरिया।
ऐसी वैसी मोय मत जानैं
तू मोय नेंकहु ना पहचानैं
वारी है तेरी उमरिया, देखूंगी सांवरिया।
कुंजन बंशी बैठ बजावै
बंशी में लै नाम बुलावै
छीनूंगी तेरी बंसुरिया, देखूंगी सांवरिया।
टेड़ो है ठाड़ो मुसकावै
टेड़ी टेड़ी सैन चलावै
टेड़ी है तेरी नजरिया, देखूंगी सांवरिया।
चोर-चोर के माखन खायो
जाके बल गिरिराज उठायो
जानैं है ब्रज की नगरिया, देखूंगी सांवरिया।
काऊ दिन हाथ परैगो घर में
बदलो लूंगी ये है मन में
फारी है कारी चुनरिया, देखूंगी संवरिया।।

------o------

कारे-कारे हट जा रे, मोते अंग न छुवा।
आ री आ री गोरी-गोरी, मोते अंग तो छुवा।।
मैं सोने की सी गोरी, मेरो रुप चंदा चमक्यो री,
तू तो कारो है रे पियारे, मोते अंग न छुवा।
गोरी नैना तेरे कारे, कारे नैन बान तैंनें मारे,
तोते रंग मेरौ सुधरैगो, मोते अंग तो छुवा।
ऐसो कारो तू है कान्हा, न्हाय कें कारी कर दई जमुना,
मैं भी कारी ना है जाऊं, मोते अंग न छुवा।
कारे केश तेरे है प्यारी, धोय करी तैंनें जमुना कारी,
मैं कारो तू मन की कारी, मोते जोट मिला।
मैं तन की मन की हूँ गोरी, तू तनमन को कारो बिहारी,
याही ते तू भयो त्रिभंगी, मोते अंग न छुवां।
तैनें देख्यो टेढ़ी चितवन, बन्यो त्रिभंगी याही ते तन,
तेरे बोल बड़े टेढ़े हैं, मोते अंग मिला।
बातन-बातन प्रीति बढ़ी है, गोरी श्याम के रंग ढली है,
बादर बिजरी जोट बनी है, आ तू गरे लगा।।

------o------

ऐ श्याम चलो ऐयो, ऐ श्याम चलो ऐयो।।

बैठी अकेली रात में जमुना किनारे में,
तेरी ही राह देखूं चांदी की रेत में,
ऐ श्याम चलो ऐयो..।
लहरों की छपछपाहट जैसे कि आयो तू,
पत्ते खड़कते लगतो आयो कहीं से तू,
ऐ श्याम चलो ऐयो..।
बहतौ हवा को झोंको कछु कह रह्यो है तू,
फूलों की महक आई महको है मानो तू,
ऐ श्याम चलो ऐयो..।
चंदा को देख तेरो मुख याद में आयो,
यमुना को देख तेरो रंग ध्यान में आयो,
ऐ श्याम चलो ऐयो..।।

------o------

अपने लालाय तनक समझाय दीजो,
मोपै ऊधम सह्यो न जाय।।

जब मैं जाऊं पनियां भरन कूं
संग न जावै, समझाय दीजो..।
जब मैं जाऊं यमुना न्हायवे, संग न जावै..।
जब मैं जाऊं दही बेचवे, संग न जावै..।
जब मैं जाऊं धार काढ़वे, संग न जावै..।
जब मैं जाऊं वन कुंजन में, संग न जावै..।।

------o------

राधिका लाड़िली अलक लड़ी।।

अलक लड़ैतो मोहन पिय के मनमन्दिर में मूरति अड़ी
ऐसी लिपटी श्याम कंठ सौं, नीलमणी मोतियन लड़ी
गौर घटा घनश्याम घटा पर रस की बरसा रही झड़ी
कोटि कामशर मूर्छित हरि के जीवन की संजीवनी जड़ी
शरणागत के सिर धरबे कौ वरद अभय कर लिये खड़ी।।

मार्‌यो मार्‌यो री घड़े में कंकर आय सहेली,
टूक-टूक घड़ो है गयो।।
जैसे जल भर चली घड़ो लै
जाने आय गयो वो कहं ते
जान न पाई आय सहेली, टूक-टूक..।
भीजी साड़ी चूनर सबरी
हंस-हंस देखै करै अचगरी
कहै कौंन ते जाय सहेली, टूक-टूक..।
कैसे जाऊंगी में घर को
कहा कहूंगी सास ननद को
बात बनैगी मोपै नाय सहेली, टूक-टूक..।
पीताम्बर लै मोय उढ़ावै
चूनर लै निचोर सुखवावै
व्यार करै मेरी आय सहेली, टूक-टूक..।
मोहि सिखावै बात बनानो
पांय रिपटवे को कीजो बहानो
नेंक न सास रिसाय सहेली, टूक-टूक..।

नंद को नटखट बड़ो रसीलो
ऊधम पै हू लगै छबीलो
(वाकी)मुसकन चित चुभ जाय सहेली,टूक-टूक..।।

------o------

भायेली छैला श्याम आज मेरे दीनो हाथ कमरिया में,
मोय रोकी गली संकरिया में।।
मैं जाय रही दधि बेचन कूं
ये आयो मारग रोकन कूं
ये ऐसो बन्यो छिछोर देख मेरी पोंछी पीक अंचरिया में।
जित मैं जाऊं तित ये जावै
बैठूं बैठै चलूं संग आवै
ठट्ठा करै हंसै उतपाती हल्ला भयो नगरिया में।
पहले याने मटकी छीनी
पाछे ते बरजोरी कीनी
नैनन ते घायल करै अरे याके लग रहे बान नजरिया में।
मेरी आयो रात अटरिया में
जब चंदा छिप्यो बदरिया में
मैं पांय परी पै नाय मान्यो मेरे सोवै साथ सेजरिया में।।

मतजा मतजा ओ नन्दलाला, सुनजा सुनजा बतियां मेरी

मेरे हाथन मेंहदी लग रही
लटुरी नथ सौं उरझी जा रही
आजा आजा ओ नन्दलाला, लट कूं नथ से सुरझा मेरी।
चूनर सिर से सरक गई है
घुंघटा की छवि बिगर गई है
रुक जा रुक जा ओ नन्दलाला, चूनर सिर पै ढक दै मेरी।
फरिया उघर गयो चोली ते
लाज हटी या तेज ब्यार ते
मैं तेरे गुन न भूलूंगी, चोली ढक दे तू मेरी।।

------o------

सबरै ब्रज कौ मोह लियो, राधा के रसिया श्याम ने।।

राधा नाम बड़ौ मस्तानो
राधा गावै भयो दिवानो
ऐसी कर दी ब्रज नगरी, राधा के रसिया..।

राधा ऐसी है गोरांगी
गोरो भयो वह ललित त्रिभंगी
करी बावरी ब्रज नारि, राधा के रसिया..।
राधा ऐसी प्रेम तरंगिनी
डूब्यो जामें श्याम विहंगिनी
राधा रस मे डार्‌यो, राधा के रसिया..।
श्री वृन्दावन भयो राधामय
शुक पिक चातक सब राधामय
लता पता राधामय की, राधा के रसिया..।।

------o------

आयो माखन चोर मेरी अटरिया में।।

जाने कैसे ये चढ़ आयो
सांकर कुंदा ना खटकायो
मोय जगाई झकझोर, मेरी अटरिया में।
चोंक उठी जागी घबराई
देखूं तो ये कुंवर कन्हाई
मेरे हियरे उठी हिलोर, मेरी अटरिया में।